Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 7, Issue - 12, December - 2024

DOIs:10.2018/SS/202412017 --:-- Research Paper / Article / Review

पर्यावरण और समकालीन हिंदी कविता

प्रा . सावित्री सूर्यकांत मांढरे
ए.एस .एम् . सी.एस.आय.टी. पिंपरी पुणे (महाराष्ट्र)
Email – savitri.mandhare@gmail.com

शोधसार : वर्त्तमान समय में पर्यावरण की समस्याए जैसे ओजोन स्तर का क्षय , ग्लेशियरों का पिघलना , प्रदूषित जल वृक्ष की कटाई , भूस्खलन , वायु प्रदुषण , जल प्रदुषण , ध्वनि प्रदुषण , मृदा प्रदुषण , जलवायु परिवर्तन इत्यादि अनेक समस्याए मनुष्यको अपनी जीवन शैली में परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित कर रही है । मनुष्य को जीवन जीने के लिए शुद्ध पर्यावरण का होना अत्यंत आवश्यक हैं । स्वच्छ पर्यावरण के बगैर स्वस्थ जीवन जी पाना मुश्किल हैं । मौसम में हो रहे अनचाहे परिवर्तन के कारन पर्यावरण की पारिस्थितिकी प्रभावित हो रही हैं । इसकारण प्रकृति में अजीब परिवर्तन हो रहे हैं । समकालीन कविता और पर्यावरण का अंत;संबंध हैं । समकालीन कविता में पर्यावरण को बचाने की चिंता प्रथम हैं । समकालीन कविता प्रकृति के मोहक चित्रण के साथ साथ प्रकृति के विनाश के कारणों की भी पड़ताल करती हैं ।

मूल शब्द : पर्यावरण , प्रकृति , ओजोन , प्रगतिवादी , मानवीकरण , उदात्त ।

1. प्रस्तावना :

आधुनिक कविता को समृद्ध बनाने में कई दिग्गज कवियों ने अपना योगदान दिया हैं । कविता का प्रारंभिक काल अर्थात भारतेंदु काल इस काल की कविता देशप्रेम सामाजिक विसंगतिया , राष्ट्रिय भाव आदि से ओत प्रोत रही हैं । द्विवेदी काल में कविता की भाषा पर संस्कार हुए । व्याकरणिक दूरियों को दूर करने का प्रयास किया गया I खड़ीबोली को अपनाने का आवाहन किया गया । स्त्री विषयक उदात्त भाव , प्रकृति का मानवीकरण इस कविता का विशेष रहा । प्रगतिवादी कवियों ने शोषण का विरोध किया । मानवतावादी दृष्टी का परिचय दिया । नयी कविता में विचार तत्व आ गए , रस की अनिवार्यता कम होती गयी । नविन उद्भावनाओं ने कविता में जगह बना ली । १९६० के बाद समकालीन परिवेश की हर एक इकाई , प्रवृत्ति आदि ने कविता में स्थान पाया । उसमे से भला पर्यावरण कैसे छुटता I समकालीन कविता में पर्यावरण के प्रति चिंता व्यक्त होने लगी । समकालीन कवियों ने पर्यावरण विषयक संचेतनाओं को अपनी कविताओं में स्थान दिया ।

2. विषय प्रवेश :

वैज्ञानिको ने पर्यावरण को मुख्यत: भू मंडल , जलमंडल , वायु मंडल एवं जिव मंडल इन चार भागों में विभाजित किया हुआ हैं । आज ये सभी दूषित हो गए हैं और इसका जिम्मेदार सिर्फ मानव हैं । वैज्ञानिक खोजों से यह स्पष्ट हो गया हैं की अन्य प्राणियों की तुलना में सबसे ज्यादा प्रदुषण मनुष्य प्राणी ही करता हैं । मनुष्य केवल जल स्थल वायु मंडल को ही नहीं प्रदूषित करता तो वह न जाने कितने निरीह वन्य प्राणियों को यातना भी देता हैं ।

पर्यावरण के विनाश के कई कारणों में से एक हैं विकास के नाम पर प्रकृति के साथ छेडछाड़ करना । औद्योगिक विकास के नाम पर जमीनों को हथिया जाता हैं । जंगलों को तोडा जाता हैं Iजंगलो को तोड़ने के कारन वन्य जीवो का आसरा छिना जाता हैं । जंगलों की कटाई होने के कारन आज की पीढ़ी को बारिश की कमी का सामना करना पड रहा

है । पानी की कमी महसूस होने लगी हैं । किसान पानी के बिना फसल नही उगा पा रहे है , अनाज की कमी हो रही है । परिणामत : महंगाई बढ़ रही है , सामान्य मनुष्य का जीना मुश्किल हो रहा है । वैसे भी पानी के बिना सजीव सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती । विकास की इस अंधी दौड़ में सारे विकसनशील देश शामिल हुए हैं । ग्लोबल वार्मिंग के लिए यही देश जिम्मेदार हैं ।

इन सारी समस्याओं को समकालीन कवियों ने अपना विषय बनाया हैं । लीलाधर मंडलोई ने अपनी कविता ' न के बराबर ' में कहा हैं

हमारे बुजुर्ग जानते थे

कितना जरुरी हैं गौरेया का होना

वे घोसले बनाती थी वहा

की ध्वनि ,शोर तरंगों से

सुरक्षित थी उनकी जिंदगी

वे उड़ गयी या खो गयी

कही हवाओं में

कहना मुश्किल

बस कभी कभी आती हैं

उनकी भयभीत आवाज

जब हम याद करते हैं उन्हें

आज पर्यावरण प्रदुषण के कारन मौसम में अनेक बदलाव आ रहे हैं । कही सुखा पड़ता हैं तो कही बाढ़ आ जाती हैं । बाढ़ के समय का चित्रण करते हुए कवी अरुण कमल कहते हैं –

धीरे धीरे उतरी हैं बाढ़

पता नहीं कौनसी कोख में

बचा हुआ जीवन फिरसे फेकता हुआ फंदा

फिर से अपनी जमी जमीं पर

लौट रहे हैं लोग बाग़

लौट रहे हैं पशु पक्षी

लौट रहा है सूर्य

लौट रहा है सारा संसार

इस प्रलय के बाद

आज का कवी प्रकृती को मनुष्य कि जिजीविषा और उसके संघर्ष के साथ जोडकर देखता है । वह उन प्राकृतिक बदलाव के प्रती ज्यादा संवेदनशील दिखाई देता है । जो औद्योगिक और वैज्ञानिक प्रगती के करण उत्पन्न हो रहे है । जो संपूर्ण मानव जाती के अस्तित्व के लिये खतरे कि घंटी बजा रहे है । मदन कश्यप ' चाहते ' कविता में पूरी दुनिया के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए नजर आते हैं ।

वे पेड़ों को काटना नहीं चाहते

उनका हरापन चूस लेना चाहते हैं ।

वे पहाड़ों को रौंदना नहीं चाहते

उनकी दृढ़ता निचोड़ लेना चाहते हैं ।

वे नदियों को पाटना नहीं चाहते

उनके प्रवाह रोक देना चाहते हैं

अगर पूरी हो गयी उनकी चाहते

तो जाने कैसे लगेगी दुनिया

आदमी जानवर नहीं बनना चाहिए इसके लिए प्राकृतिक तत्वों और जानवरों से उसका मानवीय रिश्ता बना रहना जरुरी हैं । प्रकृति जानवर और मनुष्य के इस संश्लिष्ट रिश्ते की सार्थक पड़ताल लीलाधर जगूड़ी ने ' दुसरे शरीर की खोज ' कविता में की हैं । यह एक बूढ़े बैल की स्वप्नकथा हैं । जिसमे एक बूढा बैल सपने में एक पुष्ट बिज के रूप में परिवर्तित हो जाता हैं । फिर उस बिज को वृक्ष में बदलता देखता हैं । लेकिन जब वह आँखे खोलकर देखता है

पेड़ का पूरा छात्र कांप रहा हैं

कुल्हाड़े पड रहे हैं

पेड़ नाच रहा हैं

थोड़ी देर बाद फुनगी मुकुट की तरह टेढ़ी हुई

और पेड़ एक सम्राट की तरह गिर पडा I X X X

चरचराते हुए उसके प्राण हजारो पखेरुओं की तरह उड़ पड़े

बूढा बैल उठा और मारे डर के पोंकता हुआ ऐसा दौड़ा

जैसे की जवान हो

भायु भी शक्ति देता हैं I

समकालीन कवियों ने पर्यावरण की रक्षा के लिए चुनौती बन जाने वाले सभी तत्वों के प्रति विरोध दर्शाया हैं । प्रकृति और पर्यावरण के साथ ही मानव जीवन का संतुलन बना रहेगा । ऐसे में ही विकास के नए मॉडल की सार्थकता होगी ऐसा समकालीन कवियों का मानना हैं ।

डॉ. शिवदान सिंह भदौरिया 'शिव ' इनकी 'कोसी तांडव ' कविता एक लंबी कविता हैं जिसमे उन्होंने अगस्त २००८ में कोसी की भीषण बाढ़ से बिहार में हुए महाविनाश का यथार्थ चित्रण किया हैं । कवी धीरे धीरे खतरे के निशान से ऊपर

बढती कोसी नदी और उसका महासागर में परिवर्तित होता हुआ रूप , उसकी धारा में बहते छानी छप्पर, बकरी कुत्ता और गाय बैल के साथ डूबते बहते लोगों की पीड़ा अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त करता हैं ।

“ पशु पक्षी , पेड़ पौधे आदमी सब

वरुण - सेना के बंदी

सूरज , चाँद , तारे , ग्रहों , उपग्रहों से

पानी की बरसात

पानी में मिलकर सब कुछ

हो गया पानी I”

जलस्त्रोतों का सूखते जाना मानवता के सामने एक गंभीर संकट हैं । छोटी से छोटी नदी का सुखना भी भविष्य की बड़े संकट की और संकेत करता हैं । हरिश्चंद्र पाण्डेय अपनी कविता नदी सुख गयी कविता में इसी संकट की और संकेत करते हैं ।

“अभी तो ये फुल गुब्बारे के बाहर रखी

एक सुई हैं

इसे अभी देख पा रहा हैं केवल एक पुल

जो बहुत बड़ा धोखा खा गए इंसान की तरह खड़ा हैं

अवाक् I”

कुंवर नारायण की कविताओं में शुरू से ही प्रकृति के प्रति आकर्षण मिलता हैं चक्रव्यूह और परिवेश , हम तुम ऐसी बहुत सी कविताओं में यह देखा जा सकता हैं ।

यहाँ एक पेड़ था

जहाँ एक फ़ोंक हैं

बिजली गिरी होगी

ठीक उसके ऊपर

यहाँ एक नीड़ था

जहाँ अब रांख हैं

रोशनी हुई होगी

चारों तरफ जंगल में

यहाँ एक स्वप्न था

जहाँ अब शांति हैं I

अशोक वाजपेयी के कविताओं पर भी समकालीन कविता का प्रभाव दिखाई देता हैं। उनके भी सभी काव्य संग्रहों में भी पर्यावरण की चिंता दृष्टिगोचर होती हैं। उनका काव्य संग्रह कहीं कोई दरवाजा की पंक्ति हैं

प्रार्थना करों की हरे पेड़ और अधिक हरे रहे

ताकि जीवजंतुओं का जन जीवन बना रहे

नरेश सक्सेना ने अपनी एक छोटी कविता के माध्यम से परकृति के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की हैं। वह कहते हैं की प्रकृति में से मैं अगर एक पेड़ भी मै बचा सकू तो वह मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। वे लिखते हैं,

अंतिम समय जब कोई नहीं जाएगा साथ

एक वृक्ष जायेगा

अपनी गौरेया गिलहरों से बिछुड़कर

साथ जायेगा एक वृक्ष

अग्नि में प्रवेश करेगा वही मुझसे पहले

कितनी लकड़ी लगेगी

श्मशान की टालवाला पूछेगा

गरीब से गरीब भी सात मन तो लेता ही हैं

लिखता ही अंतिम इच्छाओं में की

बिजली के दाह घर में हो मेरा संस्कार

ताकि मेरे बाद

एक बेटा और एक बेटी के साथ

एक वृक्ष भी बचा रहे संसार में

पर्यावरण और पेड़ों के प्रति संवेदना का यह अप्रतिम उदहारण हैं। कवी मदन कश्यप के काव्य पर्यावरण प्रदुषण का विश्वव्यापी संकट मानव सभ्यता को खतरे में डालने की चिंता से अनुप्रेरित हैं I वह प्रकृति के तत्व जो हमें जीने के लिए आवश्यक होते है उन्हें हमने उपभोग की तरह बरतना शुरू किया और नतिजा यह हुआ की आज हमें जीवित रखनेवाले उन तत्वों का अस्तित्व ही खत्म होने जा रहा हैं। आज उन्हें बचाने की कवायत की जा रही हैं।

इसके साथ ही समकालीन कवी ने नदी के जल में फैलते प्रदुषण को भी अपने काव्य का विषय बनाया हैं। पानी की दुर्लभता को भी अपना विषय बनाया हैं। प्रदुषण के कारन गंगा की दुर्दशा और पानी के व्यावसायिक उपयोग की और भी संकेत किया हैं। ज्ञानेंद्र पति ने 'नदी और साबुन' कविता में लिखा हैं

नदी !

तू इतनी दुबली क्यों हैं ?

और मैली - कुचैली

मरी हुई इच्छाओं की तरह मछलियाँ क्यों उतराई है

तुम्हारे दुर्दिनों के दुर्जल में

किसने तुम्हारा नीर हरा

कल-कल में कलुष भरा

.....आह लेकिन स्वार्थी कारखानों का तेजाबी पेशाब झेलते

बैंगनी हो गयी तुम्हारी शुभ्र त्वचा

हिमालय के होते भी तुम्हारे सिरहाने

हथेली भर की एक साबुन की टिकिया से

हार गयी हो तुम युद्ध

गंगा की धारा के दुबली होने के साथ साथ उसमे बढ़ रहे प्रदुषण के कारन मर रही मछलियों के प्रति भी कवी ने चिंता व्यक्त की हैं । कवी ने साबुन की टिकिया के प्रचार प्रसार से पतित पावनी पाप नाशिनी गंगा की धारा के हार जाने का संकेत दिया हैं । जहां कवी गंगा की धारा के हार जाने की बात कहता हैं वहां उसे पाप नाशिनी कहकर उसका सांस्कृतिक महत्व भी बढ़ाता हैं ।

समकालीन कवी पानी के कुप्रबंधन को पर्यावरण के संकट का प्रमुख कारन मानते हैं । एनडी के पानी का सहज प्रभाव अगर रोका जाता हैं तो दूसरी और डूबक्षेत्र का निर्माण हो जाता हैं जिसमे गाँव के गाँव , शहर के शहर का अस्तित्व ही मीट जाता हैं । समकालीन काल के अधिकांश कवियों ने यही धारणा कर ली हैं की विकास के नाम पर नदियों का सहज प्रवाह बाधित करना पर्यावरण के साथ छेड़छाड़ हैं ।

3. निष्कर्ष :

वैज्ञानिक औद्योगिक प्रगति के कारन प्राकृतिक बदलाव हो रहे हैं । इन बदलावों के प्रति समकालीन कवी संवेदन शील हैं I पर्यावरण के असंगति के कारन संपूर्ण मानव जाती का अस्तित्व खतरे में पड़ गया हैं । आज की कविता चेतना , प्रेरणा और उर्जा से भरी हुई हैं इन शक्तियों से वह आम आदमी की रक्षा करना चाहती हैं । पर्यावरण का संकट आज संपूर्ण विश्व के लिए चुनौती बन गया हैं । इन चुनौतियों को समकालीन कवियों ने अलग ढंग से स्वीकार किया हैं । पर्यावरण प्रदूषण की समस्या किस तरह मानव जीवन को प्रभावित करती हैं उन स्थितियों के प्रति समकालीन कवी संपूर्ण मानव जाती को सचेत करता नजर आता हैं ।

संदर्भ:

१. डॉ. पांडे सतीश , ‘समकालीन कविता सृजन सन्दर्भ ‘, शैलजा प्रकाशन कानपुर , प्रथम संस्करण २०१६
२. चंदा बैन , ‘वैश्विक पर्यावरण परिदृश्य और समकालीन हिंदी कविता’ शोध आलेख - श्रृंखला एक शोध परख वैचारिक पत्रिका ISSN नं २३२१ – २९० X vol ६ , इशू ८
३. डॉ. वर्मा आर. पी ,’ समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण विमर्श ‘ शोध आलेख – इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ सायंटिफिक एंड इनोवेटिव रिसर्च स्टडीज ISSN २३४७ – ७६६० ,
४. डॉ. बीवा कुमारी ,’ समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण विमर्श ,शोध आलेख – इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हूमेनीटीज एंड सोशल साइंस इन्वेंशन ISSN २३१९ -७७२२ ऑक्टो.२०१८
५. डॉ . हरदेनिया भूपेंद्र, शोध आलेख – ‘शब्द ब्रह्’ १७ जनवरी २०१३ ISSN २३२० – ०८७१
६. बैन चन्दा , ‘वैश्विक पर्यावरण परिदृश्य और समकालीन हिंदी कविता E-ISSN२३४९ – ९८० X